

Name - (Dr) D. N. Singh

Designation - Associate Professor

Deptt - Political Science

Paper - Political Thought

MA - Pol-sc - 1st sem

Topic - Aristotle as a critic of Plato

Date - 07-11-2020

जर्मनी : फेरेटो के आलोचक के साथ में

1950-1951 AS + (1951) (1951)

फेरेटो के राजनीतिक जीवन की विवेचना करी आलोचना जर्मनी के साथी हुई, उनमें समाजवादी विचारों के साथ फेरेटो आलोचक के साथी नहीं हुई। उनमें न केवल फेरेटो की 'राजनीतिक' की प्रमुख विचारधाराओं के ही अन्य साथी मिले, बल्कि 'सोवियत' की भी उनके करी आलोचना की है। फेरेटो इस बात से उत्सुक नहीं राजनीतिक जीवन को देखते हुए फेरेटो मिले है। फेरेटो ने जर्मनी में लिखा है, "यदि समाजवादी की भाँति जर्मनी ने सोचा कि वह एक सुशिक्षित देश में आया नहीं था, जब तक कि जर्मनी सब सर्व-सम्पत्तियों का देश के साथ न आता है।"

जर्मनी का 'सिस्टम' के विचारों की आलोचना—जर्मनी में 'राजनीतिक' के ही प्रभाव तथा सुशिक्षित विचारों की आलोचना की है। फेरेटो की यह कल्पना द्वारा 'सिस्टम' में विभिन्न सामाजिक व्यवस्था (सिस्टम) के सम्बन्ध की आवश्यकता को स्वीकार नहीं कर सका। फेरेटो, वह राजनीतिक शासक के निर्दिष्ट शासन सम्बन्धी फेरेटो के विचारों से भी सम्बन्ध नहीं हो पाया। जर्मनी की आलोचनाएं इस प्रकार हैं—

जर्मनी का राजनीति के सम्बन्ध सम्बन्धी विचारों की आलोचना—फेरेटो राजनीति और परिवार की कुल्लुका राज्य की प्रकृति (Unity) स्थापित करना चाहता था। जर्मनी की सम्बन्धता है कि राज्य के अधिनियम के दिन न वह आवश्यक है कि राज्य का वह राज्य तक एकीकरण नहीं किया जाए जिस सीमा तक फेरेटो राजनीतिक प्रकृति चाहता है। जर्मनी के इतिहास में अधिनियम रूप से किया गया एकीकरण राज्य के लिए सुझा है बल्कि वह उसे एक ही कर रहेगा। फेरेटो की सम्बन्धी व्यवस्था में कोई भी चीज, एक समय में एक पुरुष की तथा दूसरे समय में दूसरे पुरुष की नहीं हो सकती है। इसी प्रकार कोई पुरुष एक समय में एक ही एक दूसरे समय में दूसरी चीज का प्रति हो सकता है। इस प्रकार एक ही चीज कई पुरुषों की नहीं तथा एक ही पुरुष कई चीजों का प्रति हो जाएगा। जर्मनी के अनुसार हमें तो तीन क्षेत्र में अनाजकता उत्पन्न हो जाएगी। पुरुष की विचारों का प्रति हो जाएगा। जर्मनी के अनुसार हमें तो तीन क्षेत्र में अनाजकता उत्पन्न हो जाएगी। फेरेटो की विचारों की आलोचना करने की पुरुष प्रति ही सामाजिक रूप से उनमें सम्बन्ध उत्पन्न हो जाएगा। फेरेटो की विचारों के सम्बन्ध के कारण राज्य में युवा और इस उम्र रूप धारण कर लेना। फेरेटो यह समझता है कि राज्य के विकास परिकार करने वाली उम्रों को ही के सब छोड़े भिन्न जाएँ, राज्याधीनियों में पैदा बड़ेगा। जर्मनी में इस सम्बन्ध की विचारों उम्रों हुए कहा है कि सम्बन्धी व्यवस्था में उत्पन्न बच्चे मानु-विन्दु स्तर से अधिक रहें और समाजवादी की आवश्यकता से प्राप्त होने वाले स्तर नहीं मिल जाएगा क्योंकि जो जर्मनी सार्वजनिक जिम्मेदारी की होती है, वह किसी की भी जिम्मेदारी की नहीं होती। फेरेटो समझता है कि सार्वजनिक रूप से बच्चों का भरण-पोषण और शिक्षा अच्छी हो सकती है। जर्मनी का मत है कि अनायास्य के बच्चों के भरण ही, सार्वजनिक रूप से बच्चों को पालना-पोषण नहीं हो जा सकती है। किन्तु ही गुण बच्चों की केवल परिवार की आवश्यकता में ही प्राप्त होते हैं। माता-पिता के स्तर के अभाव में बच्चा न तो पालन सकता है और न सामाजिक आनन्द प्राप्त कर सकता है। जल-वेद नागरिकों के निर्माण के लिए आवश्यक है कि परिवार हो। इसके अधिनियम जर्मनी सम्बन्ध की आलोचना इस आधार पर भी करता है कि यह व्यवस्था केवल अधिभावक वर्ग के लिए नहीं जर्मनी की नहीं है। यदि यह व्यवस्था अच्छी है तो पहले इसे अधिका वर्ग पर ही लागू किया जाना चाहिए क्योंकि अधिभावक वर्ग शिक्षित और ज्ञानवान होता है और अधिका वर्ग अज्ञानी। ऐसी अवस्था में तो समाज और परिवार अधिभावकों की अनेक शक्तियों के लिए अधिक कमजोरी का कारण बन सकते हैं।

जर्मनी के अनुसार व्यवस्थापिका की दृष्टि से भी परिवार के सम्बन्ध की जर्मनी उचित नहीं मानता। जर्मनी के अनुसार परिवार जाला की अधिष्ठाता तथा तीन-सम्बन्ध के नियमानुसार संघावन के लिए एक अनुसूचित संस्था है। फेरेटो भूल जाता है कि यह एक व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता का परिणाम है। सम्बन्धी व्यवस्था में परिवार सम्बन्ध न होने से योग्य, तथा अति अंधराध भी अधिक होंगे। "इस सम्बन्ध में, जिसमें अपने तथा अन्य व्यक्तियों के तमाम प्राकृतिक और सामाजिक रिश्तों का ज्ञान है, ऐसे अंधराध बन

होते हैं। अरस्तू उस समाज में, जहाँ सम्बन्ध होते ही नहीं ऐसी घटनाएँ और ऐसे अवस्था बहुत अधिक हो जाते।" (अरस्तू)

श्लेटी ने पशु जगत से सादृश्य दृष्टकर उसके आधार पर स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों को अवस्थान करने की जो चेष्टा की है, उसको भी अरस्तू ने अनुचित माना है क्योंकि पशु जगत एवं मानव जगत के बीच व्यवहार एवं उससे निकलने वाले परिणामों में बड़ा अन्तर है। पशु जगत में जहाँ मादाओं के किसी भी प्रकार के पारिवारिक कार्य नहीं होते, वहाँ मानव जगत में स्त्रियों के साथ पारिवारिक कर्तव्य अनिवार्य रूप से जुड़े हुए हैं, जिनका समुचित रूप से निर्वाह किया जाना अत्यन्त आवश्यक माना गया है। साथ ही इन पारिवारिक कर्तव्यों का निर्वाह करना स्त्रियों की सहज प्रकृति भी है। अरस्तू के अनुसार उन्हें कतिपय राजनीतिक प्रकृति के कर्तव्यों के निर्वाह के लिए इतनी निर्यतता से पारिवारिक कर्तव्यों से मुक्त कर देना उचित नहीं है।

अरस्तू द्वारा सम्पत्ति के साम्यवाद सम्बन्धी विचार की आलोचना—अरस्तू ने यह माना है कि श्लेटी सम्पत्ति के सामूहिक स्वामित्व तथा सामूहिक उपयोग का समर्थक है, अतः अपनी आलोचना में पहले उसने इस प्रकार की व्यवस्था की त्रुटियों का उल्लेख किया है और उसके बाद सम्पत्ति सम्बन्धी उस व्यवस्था के गुणों का उल्लेख किया है जिसे वह स्वयं उचित मानता है।

अरस्तू के अनुसार सम्पत्ति के सामूहिक होने की अवस्था में जो व्यक्ति कठोर परिश्रम करने वाले होंगे, उन्हें यह शिकायत होगी कि उन्हें अपने परिश्रम के अनुपात में कम प्रतिफल मिलता है और कम परिश्रम करने वालों को अधिक प्रतिफल मिलता है। मनुष्य तभी अधिक क्षमता और परिश्रम के साथ कार्य करते हैं जब उन्हें वैयक्तिक लाभ की प्राप्ति की सम्भावना होती है। अरस्तू के अनुसार सामूहिक सम्पत्ति और सामूहिक उपयोग सब प्रकार के झगड़ों की जड़ होते हैं।

श्लेटी द्वारा प्रतिपादित सम्पत्ति सम्बन्धी व्यवस्था की आलोचना करते हुए अरस्तू निजी सम्पत्ति के अधिकार को स्वीकार करता है। उसके अनुसार निजी सम्पत्ति सद्जीवन का एक आवश्यक तत्व है। सम्पत्ति के आधार पर ही व्यक्ति का आधार सम्भव है। यह परिवार के अस्तित्व और उसके सुचारु संचालन के लिए अपरिहार्य है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता तथा योग्यताओं का विकास करने के लिए कुछ वैयक्तिक सम्पत्ति अत्यावश्यक है। यदि यह उसे न दी जाए तो उसका विकास अवरुद्ध होगा तथा अन्ततोगत्वा इससे राज्य को हानि उठानी पड़ेगी।

अरस्तू द्वारा दार्शनिक शासक सम्बन्धी विचार की आलोचना—श्लेटी ने अपने आदर्श राज्य में शासन की दृष्टि से एक दार्शनिक शासक के हाथ में सौंपने की व्यवस्था की है। श्लेटी के राजनीतिक दर्शन का मूल यह ही है कि दार्शनिक शासक (विवेकपूर्ण शासन) के हाथों में राज्य के संचालन की सर्वोच्च सत्ता होने से ही आदर्श राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण हो सकता है। श्लेटी की दार्शनिक शासक सम्बन्धी अवधारणा से अरस्तू कदापि सहमत नहीं है। उसकी स्पष्ट मान्यता है कि 'कानून का शासन' किसी एक नागरिक के शासन से अधिक वांछनीय है।

अरस्तू द्वारा 'लॉज' की आलोचना—'लॉज' में अभिव्यक्त विचारों का अरस्तू पर गहरा प्रभाव पड़ा है तथापि अरस्तू ने इसकी कड़ी आलोचना भी की है। अरस्तू तो यहां तक कहता है कि कतिपय विधियों को छोड़कर दोनों ग्रन्थों ('रिपब्लिक' तथा 'लॉज') में एक ही कथानक है। अरस्तू के अनुसार 'लॉज' में नागरिकों की संख्या 5,000 निर्धारित की गयी है जो अत्यधिक है, 'लॉज' में उसने राज्य के लिए विदेश सम्बन्धों की आवश्यकता तथा महत्व की उपेक्षा की है। अरस्तू यह भी कहता है कि 'लॉज' में शासक एवं शासितों में अन्तर करने का कोई आधार निश्चित नहीं किया है, सम्पत्ति के बारे में स्पष्ट विचार प्रकट नहीं किये हैं।

निष्कर्ष—श्लेटी तथा अरस्तू के विचारों में अनेक मौलिक समानताएँ और असमानताएँ हैं। इस सम्बन्ध में डॉ. ब्राउने ने लिखा है, "अरस्तू की दार्शनिक परिधिवाँ श्लेटी के ही समान है जहाँ श्लेटी अपने पूर्व निश्चित सिद्धांतों के आधार पर एक योजनाबद्ध राज्य की रचना करने पर आभारा है और व्यावहारिक आदर्शियों को निरर्थक समझकर उनकी ओर अक्सर ध्यान नहीं देता, वहाँ अरस्तू अपनी मान्यताओं को तथ्यों की कसौटी पर बराबर कसता रहता है।" मैक्सी के शब्दों में, "श्लेटी का राज्य अपूर्ण विचारों का एक ढाँचा है जिसे प्रचार्य रूप एक दार्शनिक राजा देगा जो अपने सामने वर्तमान सभी संस्थाओं को जड़ से उखाड़ के हटाए और संवैधानिक तथा शिक्षा द्वारा एक निर्दोष सामाजिक व्यवस्था में मनुष्यों की एक नवीन तथा बेहतर जति

उत्पन्न होगा अरस्तू का भयन उस सामग्री से बना है जो पहले से ही मौजूद है, जिसे जल्दी लगाना जा चुका है और जिसे कोई भी बुद्धिमान राजनीतिक प्रयोग कर सकता है, जो कि आदर्श से विचलित-वृत्त नमूना तैयार करना चाहे तो भी दोनों विचारकों में एक सा ही भौतिक जोड़ है, एक-सी ही व्यवस्था की पर एक-सा ही मनुष्य का प्रेम, एक-सी ही न्याय तथा बुद्धि के प्रति आस्था, एक-सी ही शिक्षा में विद्यमान एक-सी ही मानवता में आस्था तथा शुभ जीवन की प्रति के लिए एक-सी विद्वान विचार्य पढ़ती है।

प्लेटो और अरस्तू की तुलना करते समय प्रायः दो निष्कर्ष निकाले जाते हैं—प्रथम, प्रत्येक व्यक्ति को प्लेटोवादी हो सकता है या अरस्तूवादी। द्वितीय, अरस्तू सबसे बड़ा प्लेटोवादी है। दम्भुतः दोनों ही विचार एकसरीय हैं। प्लेटो और अरस्तू एक-दूसरे के विरोधी नहीं थे। दम्भुतः यह है कि उनका विरोध आगे के अरस्तू के सिद्धान्त भी आदर्श जयवा श्रेष्ठ राज्य के विचार पर आधारित है, उसने अपने आदर्श को केवल प्लेटो की काल्पनिकता और अव्यावहारिकता से मुक्त कर दिया है। प्रो. हर्बिन ने लिखा है—“उसका (अरस्तू) व उसके गुरु प्लेटो का अन्तर उसके विचार के सार का कम व उसके रूप व विधि का अधिक है। वे अर्थशास्त्र विचार जो अरस्तू के विचारों में प्रमुख हैं प्लेटो में पाये जाते हैं। पर प्लेटो का उनकी अभिव्यक्ति का वह जहाँ संकेत, आभास या दूरान्तों का है, अरस्तू में वे उन निश्चित व स्पष्ट मान्यताओं के रूप में पाये गते हैं, जो सामान्य वैज्ञानिक सिद्धान्त की व्यवस्था से पूरी तरह सम्बद्ध हैं। प्लेटो कल्पना प्रधान व संश्लेषणात्मक है। अरस्तू यथार्थवादी एवं विश्लेषणात्मक है।”

बिड ग्रां के अभिमत में अपनी सत्यान्वेषण की वृत्ति के कारण ही अरस्तू ने प्लेटो की इतनी बड़ी लक्ष्मि आलोचनाएं की हैं। उसके अनुसार जिस प्रकार वृत्तस को सीझर कम प्रिय नहीं था उसी प्रकार अरस्तू का कथन है कि उसे प्लेटो प्रिय है, किन्तु सत्य उससे भी अधिक प्रिय है। इवन्सटोन ने इस सम्बन्ध में एक सारभूत बात लिखी है—“प्लेटो के विचारों की कमियों को सुधारने वाला उसका अपना शिष्य ही था।”

1 "As Brutus loved not Caesar less but Rome more, so Aristotle says amicus Plato, sed magis veritas—dear is Plato, but dearer still is truth."
—Will Durant
—Economics

2 "Plato Found the correctives to his thinking in his own student."